the future of power

भारत ने गत दो दशकों से अपनी घरेलू आर्थिक प्रगति, देश-विदेश में व्यवसायिक योग्यता और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक विश्व-शक्ति के रूप में अपने को स्थापित कर विश्व को अचम्भित कर दिया है।

अभी असमानतायें रह गई है - लेकिन विश्व के सबसे बड़े गणतन्त्र में जो वर्ग लाभ से वंचित रह गये हैं, उनकी आवाज उभर कर समाने आई और इस संख्या में प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

इस बीच बहुत से पश्चिमी देश, जिन्होने आशातीत आर्थिक प्रगति की, वे भारी कर्ज़ में आ गये और आज उनका ळक्च दर नाममात्र है या नकारात्मक दायरे में है, जहां से निकलने के कोई चिन्ह नहीं दिखाई देते है।

निज़ार जुमा, जो नैरोबी के एक प्रसिद्ध व्यवसायी हैं और ५० से अधिक कम्पनियों के प्रमुख है, के अनुसार इन बदलती परिस्थितियों के फल-स्वरूप विश्व में शक्ति की एक अभूतपूर्व उथल-पुथल अवश्म्भावी है। निज़ार जुमा ने ब्रह्माकुमारीज़ नैटवर्क के साथ देश-विदेश में इन बदलते परिवेशों (रूझानों) के परीक्षण करने के उद्देश्य को लेकर उच्च-स्तरीय वार्तालाप करने के लिए संगठन तैयार किया है।

निज़ार कहते हैं कि आज से २००० वर्ष पूर्व भारत के जग-प्रसिद्ध बौद्धिक, आर्थिक व आध्यात्मिक श्रोतों का प्रभाव पूरे विश्व में फैला जिसके बल पर विदेशी सभ्यता और संस्कृति को स्थायित्व प्राप्त हुआ। इसका लाभ पूर्व में चीन, मिश्र, एथेन्स, रोम और पश्चिम में उत्तरी यूरोप को प्राप्त हुआ और अन्ततोगत्वा यह शक्ति अमेरिका पहुंची और संयुक्त राज्य में केन्द्रित हुई।

निज़ार का कहना है कि वर्तमान अनियंत्रित आर्थिक व्यवस्था में बदलाव की पूर्ण सम्भावना है, जिससे संयुक्त राज्य की शक्ति पर प्रभाव पड़ेगा। एक ऐतिहासिक बदलाव के फलस्वरूप, यह शक्ति पुनः भारत की ओर आयेगी।

वर्ष १९६८ से उत्पादन और विकास के क्षेत्र में अहम अग्रणी भूमिका में अपना स्थान बनाने के पूर्व निज़ार ने वेल्स विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र, कानून और एकाउन्टेन्सी में ६ वर्ष अध्ययन किया।

आज वे औद्योगिक और व्यवसाय के क्षेत्र में विशेषतया अफ्रीका व कनाडा में, नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं और अफ्रीका और आस-पास के ४९ देशों में एडिडास ;।कपकेंद्ध खेल उपकरणों के निर्माता के रूप में विशेषतया जाने जाते हैं।

गत २७ वर्षों से निज़ार आग़ा खाँ डेवल्पमेन्ट नेटवर्क ;।हं ज्ञींद क्मअमसवचउमदज छमजूवताद्ध के अध्यक्ष के नाते सक्रिय रूप से उनके सामाजिक कार्यकलापों, जिसमें छव च्तवपिज दृ छव स्वे अस्पताल भी सम्मिलित है, शक्ति उत्पादन, फाइबर आप्टिक्स, केबलिंग सिस्टम, कृषि, बैंकिंग, होटल्स, फार्मास्यूट्क्ल्स, बीमा, खाद्य सामाग्री और प्रापर्टी डेवल्पमेन्ट आदि में अपना व्यक्तिगत योगदान दे रहे हैं।

''फ्यूचर ऑफ पॉवर'' वार्तालापों की श्रृंखला का एक विषय है जिसके अन्तर्गत निज़ार, ब्रह्माकुमारीज़ की प्रशासिका, दादी जानकी जी के साथ मिलकर एक ऐसा कार्य प्रारम्भ कर रहे हैं, जिसमें भारत में शक्ति की प्रकृति को समझने का आंकलन किया जायेगा और अपने देश की आध्यात्मिक धरोहर के प्रति देश - विदेश में किस प्रकार जागरूकता पुनर्स्थापित की जा सकती है। ये वार्तायें उत्तरदायी नेतृत्व को अर्न्तदृष्टि और विचारों की जानकारी का आधार प्रदान करेंगी।

क्या भारत जो कभी उच्चतम आध्यात्मिक विचारों का गढ़ माना जाता था, पुनः मानवीय मूल्यों में विश्व को सच्ची उदारता और विश्व की वर्तमान समस्याओं के स्थायी समाधान का पथ प्रदर्शन कर सकेगा।

निज़ार का मानना है कि ये वार्तायें इसमें भाग लेने वालों को व्यक्तिगत व व्यवसायिक रूप से उनके समक्ष आने वाले बेंससमदहमे को निपटने में सहायक होगी।

गत दो वर्षों में फ्यूचर ऑफ पॉवर कार्यक्रम भारत के १७ शहरों में और मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया में सम्पन्न हुआ। अगले दो वर्षों में भारत के १४ बड़े शहरों और दुबई, यू०के, यू०एस०ए० और अफ्रीका के देशों में प्रस्तावित है।

६८ वर्षीय निज़ार जिनको अपने देश में विशिष्ट सेवाओं हेतु केन्या के राष्ट्रपति द्वारा सिल्वर स्टार से सम्मानित किया गया है, का मानना है कि आध्यात्मिक सिद्धान्तों व मूल्यों की पुनर्स्थापना शक्ति के स्थायित्व की कुंजी है। व्यक्गित व कार्पोरेट लोभ से पश्चिमी देशों की अर्थ व्यवस्था थोड़े समय के लिए चमकी, लेकिन अब यही उनकी आर्थिक अव्यवस्था का मुख्य कारण बनी।

निज़ार का मानना है कि भारत को पश्चिमी देशों के समान, इस अव्यवस्था से बचने के लिए अपनी आध्यात्मिक धरोहर को पुनर्जीवित करना पड़ेगा और विश्व को सही पथ पर अग्रसर करना होगा।

BRAHMA KUMARIS

उन्होंने कहा कि आज विभन्न राष्ट्र 'शक्ति' का प्रयोग बल से कर रहे हैं - पहले यह एक तानाशाह के रूप में था, आज के युग में नितान्त स्वार्थ का बोल-बाला है, जिसके परिणाम स्वरूप विश्व अव्यवस्था का अनुभव कर रहा है।

एक अच्छे नेतृत्व का अभाव सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में देखने को मिलता है, जिसके कारण पारिवारिक विघटन, मादक वस्तुओं का प्रयोग, वित्तीय अस्थिरता व कमज़ोर व्यक्तिगत व वैश्विक स्वास्थ को बढ़ावा मिल रहा है।

''फ्यूचर ऑफ पॉवर'' का शुभारम्भ नवम्बर २००९ में हैदराबाद में एक दिवसीय वार्तालाप से हुआ। इसमें २६ विचारशील विशिष्ट व्यक्तियों ने - जिनमें आधुनिक विचार धारा के आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री, श्री चन्द्रबाबू नायडू भी थे, मीडिया, व्यवसाय, शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इस वार्ता से प्रतिभागियों को अपने जीवन में शक्ति के अर्थ को समझने व इसके आंकलन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

इण्डियन स्कूल ऑफ बिजनेस, हैदराबाद के डीन, श्री अजीत रंगनेकर ने कहा कि आज के दिन मेरे बगीचे में आश्चर्यजनक बीज को बोया गया, अब मुझे उन्हें पल्वित करना, पानी देना, खाद देना है और मुझे निणर्य लेना होगा कि इस बगीचे को मैं क्या करूं, क्या मैं इसका उपयोग स्वयं ही करूंगा या अन्य के साथ बाटूंगा।

मीडिया अग्रज श्री रामोजीराव, रामोजीराव ग्रुप ;ळतवनचद्ध के मुखिया ने कहा कि हमारी यात्रा मानसिक सद्भाव की है। वस्तुतः शक्ति ही सद्भाव, विश्वास और दूसरों के प्रति आदर की शक्ति है। यह एक नैत्यक क्रिया है जो एक पूर्ण पुरूष की भांति ईमानदारी से जीवन निभाने की कला है। यही मूल्य और सद्भाव शक्ति है।

पदमश्री से सम्मानित श्री शान्ता सिन्हा, जो दायें बाजू की एक सक्रिय कार्यकर्ता हैं व जिन्हे आन्ध्र प्रदेश के ग्रामों में ५०० बच्चों को बाल श्रमिक के रूप से मुक्ति का श्रेय प्राप्त है, ने कहा कि ''आज की वार्ता हेतु कोई तैयारी नही की गई और चर्चा का विषय सत्य, विश्वास, आस्था, प्रेम असाधारण थे। अभी तक मैनें जिन वार्तालापों में भाग लिया, उनमें यह सम्मिलित नही थे। यह एक नई शुरूआत है। हमें इनकी और अधिक आवश्यकता है और हमें इन पर विचार करने में कोई झिझक नही है।''

विदेशी प्रतिभागियों में दक्षिणी अफ्रीका की प्रसिद्ध महिला उद्योगपति ॅमदकल स्नबें.ठनसस और दक्षिणी अफ्रीका की पूर्व प्रथम महिला ैदमसम डइमाप ने कहा कि उनकी इच्छा है कि वे शक्ति को अच्छे प्रभाव के रूप में देखें। उन्होंने कहा मैने अभिमान को नम्रता में परिवर्तित होते हुये पाया है। इसका पहला कदम व्यक्तिगत और आन्तरिक शक्ति है। अन्तोगत्वा इसे हमें सामूहिक शक्ति का रूप दे सकते हैं।

श्री एस० गुरूमूर्ति जो एक सक्रिय हिन्दु कार्यकर्ता, समाज सुधारक, बुद्धिजीवी लेखक हैं ने कहा कि दबाव की शक्ति सदैव असफल होती है ओर प्रतिरूप में अहिंसा को जन्म देती है। विश्व को सही दिशा दिखाने के लिए हमें अच्छाई, सद्भाव व अच्छे लोगो के प्रति सभी स्तरों पर आदर भाव रखना होगा। उन्होने कहा कि भारतीय मानसिकता में निहित भाव है कि आध्यात्मिक शक्ति सभी शक्तियों का श्रोत है। इस तथ्य को शब्दों से जीवन शैली में और सभी स्तरों पर व्यवहारिक पक्ष से, स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करना होगा।

ब्रह्माकुमारीज़ की प्रशासनिक प्रमुख, दादी जानकी, जिन्होंने वार्ताओं में भाग लिया, ने कहा की सभी प्रतिभागी जो मानवता की सेवा करते हैं वे निस्वार्थ भाव से कर रहे हैं। अभी वे अकेले - अकेले कर रहे हैं। यदि मिलकर करें तो वह शक्तिपूर्ण होगी। आज विश्व में अहिंसा और बनावटीपन असहनीय है। परिवर्तन के लिए, हमें मतभेदों से दूर होना पड़ेगा। दूसरे की अच्छाई पर दृष्टिपात करने से प्रेम उपजेगा। निस्वार्थ भाव प्रेम बढ़ाता है। जब हम दूसरे की कमजोरियों को देखेंगे तो प्रेम व सहयोग नही दे सकेंगे। जब सेवा प्रेम भाव से बिना किसी अपेक्षा के की जाती है, जब हम ईश्वर के प्रति सर्व - सम्बन्ध जोड़ें और ईश्वर को ही हमारा हित करने दें, जब जीवन में लेने के स्थान पर हमारी सोच देने की होगी, तब वहां शक्ति होगी।

निज़ार ने कहा कि भारत की आध्यात्मिक शक्ति को जब सांस्कृतिक और वित्तीय बल में परिवर्तित किया गया तो उससे हमारे देश का आर्थिक और राजनैतिक महाशक्ति के रूप उद्भव हुआ, लेकिन लोगो ने इस आध्यात्मिक, आन्तरिक और वाहय शक्ति को नजरअन्दाज करना प्रारम्भ कर दिया और फलस्वरूप अपने स्वार्थ के लिए ही प्रेम और धन की शक्ति लगाने की भावना का जन्म हुआ। इससे हमारी बौद्धिक, आर्थिक और आध्यात्मिक शक्ति का बहाव हजारों वर्षों तक भारत से दूसरे देशों की ओर होने लगा। पश्चिमी देशों में वर्तमान वित्तीय संकट इस बात का संकेत है कि २००० वर्ष पूर्व हुई इस प्रक्रिया की पुनरावृत्ति की सम्भावना

है। निज़ार का मानना है कि इसके लिए भारत के नेतृत्व को शक्ति के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना होगा, और आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों के मूल महत्व और विश्वास को पुनर्स्थापित करना होगा।

लेकिन आन्तरिक शक्ति की प्रकृति क्या है? किन कारणों से इस का ह्रास हुआ। इस की पुनः प्राप्ति कैसे हो सकती है? और व्यवहारिक जीवन में प्रयोग से, इसका स्वरूप क्या होगा – इस ''शक्ति हस्तान्तरण'' का वर्तमान और भविष्य के नेतृत्व पर क्या प्रभाव होगा।

ये कुछ ऐसे प्रश्न है – जिन पर इस वार्तालाप में चर्चा होगी। लक्ष्य यह है कि भारत के विभिन्न नगरों में इन वार्ताओं के चार वर्ष के अन्तराल उपरान्त एक ऐसी सोच उभर कर सामने आये – जो मात्र विचारों के स्थान पर एक शक्तिशाली सामूहिक – सोच और अनुभवों के रूप में कार्य करें।

जैसा कि ''फ्यूचर ऑफ पॉवर'' की लघु पत्रिका में इंगित किया गया है कि अब हमें एक नये प्रकार के नेतृत्व की परम आवश्यकता है जिसकी जड़े ''अधिकारिक व्यक्तिगत शक्ति'' में स्थापित हो। इस लक्ष्य को लेकर, निज़ार जुमा गत २० वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ के साथ मिलकर, इन वार्ताओं की श्रृंखला से अपना सहयोग दे रहे हैं।

''फ्यूचर ऑफ पॉवर'' वार्ता अभी तक भारत के १६ नगरों में आयोजित हो चुकी है तथा १५ और नगरों में प्रस्तावित है।

अगली वार्ता औरंगाबाद के जगतगुरु संत तुकाराम नाटयगृह, सिडको में रविवार, १७ फरवरी २०१३ को सांयकाल ५:०० बजे होगी।

१७ मार्च २०१३ को मुंबई, महाराष्ट्र में इसी प्रकार की वार्ता प्रस्तावित है। अप्रैल २०१३ से दुबई, ऑक्सफोर्ड और केन्या में भी ये वार्तायें प्रस्तावित है।